B.A. History

Part: III / Papers V

By: DR. ANAND KUMAR SINGH, ASSISTANT PROF
DEPT. OF HISTORY, JAWAHAR LAL NEHRU COLLEGE
DEHRI-ON-SONE

TOPIC: भारत में मुगलों का आगमन एवं बाबर

बाबर को भारत आने का निमंत्रण पंजाब के सूबेदार दौलत खां लोदी तथा इब्राहिम के चाचा आलम खां लोदी ने दिया था।

बाबर का जन्म 14 फरवरी 1483 को मावराउन्नहर की एक छोटी सी रियासत फरगना में हुआ था। बाबर के पिता का नाम उमर शेख मिर्जा था, जो फरगना की जागीर का मालिक था। उसकी माता का नाम कुतलुग निगार खां था। बाबर पितृ पक्ष की ओर से तैमूर का पांचवा वंशज तथा मातृ पक्ष की ओर से चंगेज खां का चौदहवां वंशज था। इस प्रकार उसमें तुर्कों एवं मंगोलों दोनों के रक्त का सम्मिश्रण था।

बाबर का भारत पर आक्रमण मध्य एशिया में शक्तिशाली उजबेगों से बार-बार पराजय, शक्तिशाली सफवी वंश तथा उस्मानी वंश के भय का प्रतिफल था।

बाबर ने भारत पर पहला आक्रमण 1519 में बाजौर पर किया था और इसी आक्रमण में ही उसने 'भेरा' के किले को भी जीता था। बाबर ने पानीपत विजय से पूर्व भारत पर चार बार आक्रमण किया था। इस प्रकार पानीपत विजय उसका भारत पर पांचवा आक्रमण था। पानीपत के प्रथम युद्ध (21 अप्रैल, 1526) में बाबर की विजय के मुख्य कारण- उसका तोपखाना एवं कुशल सेनापतित्व था। बाबर ने युद्ध में तुलगमा युद्ध पद्धति का प्रयोग किया जो स्वयं उजबेगों से ग्रहण किया था। मुगल साम्राज्य को स्थायित्व प्रदान करने हेतु बाबर को कई युद्ध लड़ने पड़े। 17 मार्च 1527 को राणा सांगा के विरुद्ध खानवा का युद्ध हुआ, जिसमें बाबर विजयी हुआ। 29 जनवरी 1528 को मेदिनीराय के विरुद्ध चंदेरी का युद्ध हुआ। 6 मई, 1529 में घाघरा के युद्ध में बिहार तथा बंगाल की संयुक्त सेना को बाबर ने पराजित किया।

बाबर ने सर्वप्रथम सुल्तान की परम्परा को तोड़कर अपने को बादशाह घोषित किया था। इस प्रकार बाबर ने भारत में एक मजबूत मुगल साम्राज्य की नींव डाला।